



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्ति पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
टूर भूमि	१९-७-२३	१०	१-६

अधिक बरसात में विशेष सलाह का पालन कर कपास में नुकसान होने से बचाएँ : प्रो. काम्बोज हकूमि के वैज्ञानिक दे रहे कपास की फसल बचाने के टिप्प

हरियाणा ब्यूज मिसार

बरसात के बाद कपास में निराई गुडाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद भी टी कपास में एक बैग गुरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। यह सलाह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें।

उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में से के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सैद्धांतिक स्तरवर्त ७० या टीपोल की ६०

दो फेनोनोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएँ : डॉ. गालिक

कपास अनुबादी के प्राचीरी डॉ. कर्मन शिंह मैत्रिक ने बताया कि कपास भी फसल ने गुलाबी सुई की बिवरणी के लिए दो फेनोनोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाए तथा इनमें फसले वाले गुलाबी सुई के पतांगों को तीव्र ध्वनि के आसान पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतांग प्रति ट्रैप तीव्र ध्वनि ने आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक भी फसल में एक छिड़काव नींबू आधारित कीटनाशक (नींबूसिराइन या अस्वूक) की ५ किलो मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें।



हिसार। कपास की फसल का फाइल फोटो।

फोटो: हरिभूमि

कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि ६-८ प्रैह प्रति पत्ता एवं हरा तेला २ शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोनिकामिड (उलाला) ५० डब्बू जी की ६० ग्राम मात्रा प्रति २०० लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

कीट वैज्ञानिक डॉ. अमिल जायड ने बताया कि कपास भी फसल ६० दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुई का प्रकोप फलायि भागों पर ५-१० प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोएफोनोन (यूरोफोनोन-से-प्रो) की ५० ईसी की तीव्र गिरीशील रात्रि प्रति तीव्र पानी की दर से करें। अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर वस्तुलालास २० ईएफ की ४ मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से १०-१२ दिनों बाद करें। परायिट के लिए किसानों को लकड़ी पर एकत्रित कर नहीं करते रहें।

प्रोफेनोनोल ५० ईसी का करें छिड़काव : डॉ. जायड

कीट वैज्ञानिक डॉ. अमिल जायड ने बताया कि कपास भी फसल ६० दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुई का प्रकोप फलायि भागों पर ५-१० प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोएफोनोन (यूरोफोनोन-से-प्रो) की ५० ईसी की तीव्र गिरीशील रात्रि प्रति तीव्र पानी की दर से करें। अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर वस्तुलालास २० ईएफ की ४ मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से १०-१२ दिनों बाद करें। परायिट के लिए किसानों को लकड़ी पर एकत्रित कर नहीं करते रहें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उभू उजाला	19-7-23	३	१-५

खेतीबाड़ी

बारिश में कपास की फसल को बचाने के लिए एचएयू की तरफ से जारी की गई गाइडलाइन

फेरोमोन ट्रैप में 12-15 पतंगे आते हैं तो करें कीटनाशक का छिड़काव

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। बारिश के दिनों में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ जाता है। इसकी निगरानी के लिए प्रति एकड़ दो फेरोमोन ट्रैप लगाएं। जून से अगस्त के बीच अगर ट्रैप में तीन दिन में 12-15 पतंगे दिखते हैं तो खेत में कीटनाशक का छिड़काव जरूर करें। इसके अलावा बारिश के बाद कपास में निराई गुडाई करें। आगे बिजाई के समय डीएफी डाल दी है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया प्रति एकड़ में छिड़काव करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है।

ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने किसानों को दी है। कुलपति ने कहा कि फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव बिजाई के 100 दिन बाद ही करें। अधिक बारिश होने पर खेत से पानी निकासी की व्यवस्था करें।



हिसार। एचएयू कैंपस में लगा कपास।

जुलाई माह में कपास की फसल में थिप्स/चुरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिन से कम अवधि की फसल में थिप्स संख्या यदि 30 थिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोनिकामिड (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

खेत के आसपास से हटा दें नरमा की बनछटिया

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया को हटा दें। खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है तो उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। गुलाबी सुंडी अधिखिले टिंडों में नरमे के दो बीजों (बिनौले) को जोड़कर भंडारित लकड़ियों में रहती है। इसलिए बनछटियों से टिंडे एवं पत्ते झाड़कर नरमा की फसल में बौकी/डोडी निकलने से पहले ही करें। नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं पत्ते झाड़कर नरमा की फसल की गोजेटी फूल (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नरमा करते रहें।

कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमें फसले वाले गुलाबी सुंडी के पतंगों की 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या

अचूक) की 5 एमएल प्रति लीटर पानी के हिसाब से एक छिड़काव करें।

कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10% होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस 50 ईसी की 3 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर क्यानालफास 20 एफ की 4 एमएल मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सप्त कटु	१९-७-२३	५	५८

देसी कपास में कोई भी खाद डालने की जहीं आवश्यकता: प्रो. बीआर काल्पोज

वैज्ञानिक टिप्प: अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी करें सुनिश्चित

सच कहाँ/संदीप सिंहमार

हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुडाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैंग यूरिया का छिड़काव करें।

अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी की बिजाई करें।

देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काल्पोज ने किसानों के लिए जारी की है।

कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में खेत के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60



मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में श्रिप्स/नूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में श्रिप्स संख्या यदि 30 श्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड (उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।

गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमें फसले वाले गुलाबी सुंडी के पत्तों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कुल 12-15 पत्तों प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडीन या अचूक) की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें। उन्होंने बताया कि इसके अलावा कपास की फसल बढ़ में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है।

सफेद मक्खी पर पूर्ण रूप से नियंत्रण करें पत्ती मरोड़ रोग के कारण नस घोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विशेष द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।

कपास की फसल 60 दिनों की होने के बाद इस कीटनाशक का करें प्रयोग

कीट वैज्ञानिक डॉ. अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुंडी का प्रकोप फ्लीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस (क्यूराक्फोन/सेल्कोन/केरिना) 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। इसके बाद अगला छिड़काव जरूरत पड़ने पर वयुनालाइस 20 एण्डो की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को उखाड़ कर जमीन में दबा देंपराविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेल में छिड़काव करें। जीवाणु अंगमारी रोग के लिए किसान भई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्टीन और 600 से 800 ग्राम कोपर ऑविसलोराइड की 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास सरस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बोडाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400-500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत सभापति	१५-७-२३	५	३-६

आधिक बरसात में विशेष सलाह का पालन कर कपास में नुकसान होने से बचाएँ : प्रो. कामोज

हरियाणा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दे रहे हैं कपास की फसल को बचाने के टिप्पणी

हिसार, 18 जुलाई (विरेन्द्र कपास के खेत से पानी की निकासी वर्मा): बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय ढी ए पी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी टी कपास में एक बैग चूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय ढी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें ढी ए पी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. कामोज ने किसानों के लिए जारी की है कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एन. पी. के. इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। आधिक बरसात के बाद

(उलाला) 50 डब्लू जी की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें। अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास

सुंडी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव पर, और नरमा की फसल के आसपास कपास की जिनिंग बीते साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग बिनालौं से तेल

मिल लगती है, उन फल लगती है, उन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी रूप से नियन्त्रण करें।



हरे तेला का भी कपास की फसल।

प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड

किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब नेटवर्क	19.7.23	५	१-२

अधिक बरसात में कपास को नुकसान होने से बचाएँ : प्रो. काम्बोज

हिसार, 18 जुलाई (ब्यूरो) : बरसात के बाद कपास में निराई-गुडाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डी.ए.पी. डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बी.टी. कपास में एक बैग यूरिथ का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डी.ए.पी. नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी.ए.पी. डालें। देसी कपास में कोई भी खाद

डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि

विश्वविद्यालय के कपास की फसल का फोटो। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है।

कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एन.पी.के. इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के 100 दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्प्रे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविट, सेलवेट 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल बिलाएं। जुलाई माह में कपास की फसल में थ्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में थ्रिप्स संख्या यदि 30 थ्रिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लॉनिकामिड (उलाला) 50 डब्ल्यू.जी. की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
गोपनीय विषय	१९-७-२३	१९-७-२३	३-४

अधिक बरसात में ऐसे बचाएं कपास की फसल

हिसार 18 जूलाई (हप्र)

टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर धोल मिलाएं।

बरसात के बाद कपास में निराई गुडाई करें। अगर आपने बिजाई के समय डीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय डीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डीएपी डालें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है।

यह सलाह चैधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कुलपति ने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सौ दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में स्पै के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविट, सेलवेट 99 या

हरियाणा
विश्वविद्यालय के
वैज्ञानिक दे रहे हैं
क्रपास की फसल को
बचाने के टिप्प

जुलाई माह में कपास की फसल में
श्रिप्स/चूरड़ा, सफेद मक्खी व हरे
तेला का भी प्रकोप हो जाता है। 60
दिनों से कम अवधि की फसल में
श्रिप्स संख्या यदि 30 श्रिप्स प्रति 3
पत्ता मिले तो नीम आधारित
क का प्रयोग करें। सफेद मक्खी यदि
इ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति
ले तो फ्लॉनिकामिड (उलाला) 50
की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर
दर से एक छिकाव करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछिटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	18.07.2023	--	--

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जारी की कपास की फसल के लिए टिप्स

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करें। अगर आपने बिजाई के समय ढीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद बीटी कपास में एक बैग यूरिया का छिड़काव करें। अगर बिजाई के समय ढी ए पी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें ढी ए पी की बिजाई करें। देसी कपास में कोई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए जारी की है। उन्होंने बताया कि बिना सिफारिश किए गए खाद न डालें तथा फसल में एनपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सी दिन बाद ही करें। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करें।

अनुसंधान निदेशक डॉ जीत गम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की



बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनीलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। कीट वैज्ञानिक डॉ अनिल जाखड़ ने बताया कि कपास की फसल 60 दिनों के होने के बाद तथा गुलाबी सुण्डी का प्रकोप फलीय भागों पर 5-10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव प्रोफेनोफोस 50 ई सी की 3 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें। पैगविल्ट के लिए किसानों को लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सूखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। पत्ती मरोड़ रोग के कारण नसे मोटी, पत्तियों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाणु द्वारा फैलता है। सफेद मक्खी इस रोग को फैलाने में सहायक है। सफेद मक्खी का पूर्ण रूप से नियंत्रण करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	18.07.2023	--	--

हरियाणा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक दे रहे हैं कपास की फसल को बचाने के टिप्प अत्यधीक बरसात में विशेष सलाह का पालन करते हुए कपास में नुकसान होने से बचाएँ : प्रो. बी आर काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 18 जुलाई। बरसात के बाद कपास में निराई गुरुई करें। अगर आपने विजाइ के समय डी ए पी आल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद भी टी कपास में एक बैप यूरिया का छिड़काव करें। अगर विजाइ के समय डी ए पी नहीं आला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें डी ए पी की विजाइ करें। देखो कपास में कोई भी खाद ढालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह चैंधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कूलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने किसानों के लिए जारी की है। कूलपति ने बताया कि बिना सिपायिया किए गए खाद न ढालें तथा फसल में एन. पी. के ल्यारिड का छिड़काव भी विजाइ के सीं दिन बाद ही करें। अधिक खरसात के बाद कपास के खेतों से पानी की निकासी मुर्मिश्वत करें। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुण्डी अंडे खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुण्डी अंडे खेतों में खेत में ररम के दो बीजों (बिनाले) को जोड़कर 'भंडारित बरसात के मौसम में स्ट्री के खोल में लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविल, सेलवेट बनछटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा बीबी/डीडी निकलने से पहले ही करें। प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं घर्मों में कपास की फसल में धिम्बा/कूरड़, झाङ्कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि सफेद मकड़ी व ही तेला का भी प्रकोप हो फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी /सेलकोन/ कैरिता) 50 ही सी की 3 ओपर औंकिसक्लोरोइड को 150 से 200 इस रोग को फैलाने में महायक है। सफेद

फसल में छिप्स संख्या यदि 30 धिप्स प्रति 3 पत्ता मिले तो नीम आधारित कीटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मकड़ी यदि 6-8 प्रौढ़ प्रति पत्ता एवं हरा तेला 2 विशु प्रति पत्ता मिले तो फ्लोरिनिकामिड (उलाला) 50 ड्रल्यू की 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर घोल की दर से एक छिड़काव करें। अनुसंधान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनछटिया रखी हुए हैं या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनाले से तेल निकलने की वाली मिल लगती है, उन किसानों को अपने खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप पहले से अधिक होता है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सुण्डी अंडे खेतों में खेत में ररम के दो बीजों (बिनाले) को जोड़कर 'भंडारित बरसात के मौसम में स्ट्री के खोल में लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए चिपचिपा पदार्थ जैसे सेण्डविल, सेलवेट बनछटिया का प्रबंधन नरमा की फसल में 99 या टीपोल की 60 मिलीलीटर मात्रा बीबी/डीडी निकलने से पहले ही करें। प्रति 200 लीटर घोल मिलाएं। जुलाई माह नरमा की बनछटिया से टिंडे एवं घर्मों में कपास की फसल में धिम्बा/कूरड़, झाङ्कर नष्ट कर दें। उन्होंने बताया कि सफेद मकड़ी व ही तेला का भी प्रकोप हो फसल की शुरुआती अवस्था में गुलाबी /सेलकोन/ कैरिता) 50 ही सी की 3 ओपर औंकिसक्लोरोइड को 150 से 200 इस रोग को फैलाने में महायक है। सफेद



फून (गुलाबनुमा फूल) को समय समय पर एकत्रित कर नहीं करते रहें। कपास अनुभाग के प्रभारी डॉ करमल मिंह नालिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सुण्डी की निरामी के लिए 2 फ्लोरोमेन ट्रैप प्रति एकड़ लगाएं तथा इनमें फसले वाले गुलाबी सुण्डी के पतंगों को 3 दिनों के अंतराल पर निरामी करें। जून से पश्च अगस्त तक यदि इनमें कूल 12-15 पतंगे प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कीटनाशक (नीम्बीसिडेन या अचूक) की 5 मिली. मीट्री प्रति लीटर पानी के हिसाब से करें। उन्होंने बताया कि इसके अलाला कपास की फसल घर्म में निम्नलिखित बताते का ध्यान रखना अनिवार्य है

बरसात पड़ने पर क्यूनालफास 20 ए.एक छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सख्त रुप पीड़ी की खेत में से उदाहरक उभेज की 4 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से 10-12 दिनों बाद करें। मैं दबा दें। इस रोग से प्रभावित पीड़ी के परिवर्तन के लिए किसानों को लक्षण आसपास स्वस्थ पीड़ी में 1 भौंटर तक दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 कार्बंडाइबम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का ग्राम कोबाल क्योनाराइड 200 लीटर पानी घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में प्रति पीड़ी जड़ों में डालें। पीड़ी मरोड़ या चिकित्सा करें। जीवाणु अंगमारी रोग के के कारण नसे मोटी, पीटियों का कपास की लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम और मुडन व पीड़ी छोटे रह जाते हैं। यह स्ट्रोटोसाक्सीन और 600 से 800 ग्राम रोग वियाणु द्वारा फैलता है। सफेद मकड़ी का पूर्ण रूप से निवारण करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	18.07.2023	--	--

हकृवि वैज्ञानिकों ने कपास की फसल को बचाने के दिए टिप्प

प्रांय द्वारा लघु

हिसार। बरसात के बाद कपास में निराई गुड़ाई करे। अगर आपने बिजाई के समय दीएपी डाल दिया है तो अच्छी बारिश के बाद भी दी कपास में एक बैग गुरीया का छिड़काव करे। अगर बिजाई के समय दीएपी नहीं डाला है तो अब अच्छी बरसात के बाद उसमें भी ए पी को बिजाई करो। देसी कपास में काई भी खाद डालने की आवश्यकता नहीं है। ये सलाह धैर्यों चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा बीआर कार्यालय ने किसानों के लिए जारी की है।

कुलपति ने बताया कि बिना सिसारिया किए गए खाद न डाले तथा फसल में एपीके इत्यादि का छिड़काव भी बिजाई के सी दिन बाद ही करो। अधिक बरसात के बाद कपास के खेत से पानी की निकासी सुनिश्चित करो। उन्होंने बताया कि: बरसात के पौसम में सूखे के घोल में चिपचिपा पदार्थ जैसे मेण्डुवित, मेलवेट 99 या टॉपेल की 60 मिलीलीटर मात्रा प्रति 200 लीटर घोल मिलाए। जुलाई माह में कपास की फसल में धिय/चूरड़ा, सफेद मध्यांती व हरे तेला का

भी प्रकोप हो जाता है। 60 दिनों से कम अवधि की फसल में धिय संख्या यदि 30 धिय प्रति 3 पत्ते मिले तो नीम आधारित कौटनाशक का प्रयोग करें। सफेद मध्यांती यदि 6-8 धिय प्रति पत्ता एवं हरा तेल 2 शिय प्रति पत्ता मिले तो फलान्निकामिड (गुलाब) 50 डल्न जै जौ 60 ग्राम मात्रा प्रति 200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करो।

अनुसर्धान निदेशक डॉ जीतराम शर्मा ने बताया कि नरमा की फसल के आसपास बीते साल की नरमा की बनन्धटिया रखी रही है या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनेग व बिनोले से तेल निकालने वाली मिल लगती है, उन किसानों को उन्हें खेतों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि इन खेतों में गुलाबी सूखी या प्रकोप पहले से अधिक होता है। उन्होंने बताया कि गुलाबी सूखी अव-डिलोटिङ में नरमे के दो बीजों (बिनोले) को जोड़कर 'भौद्वारित लकड़ियों में निवास करती है। इसलिए बनन्धटिया का प्रब्लेम नरमा की फसल में बीजों/डिलोटिङ निकालने से पहले ही करें। नरमा की बनन्धटिया में टिंडे एवं पत्ते छाड़कर नहु कर दें। उन्होंने बताया कि फसल की गुलाबी अवस्था में गुलाबी सूखी से

प्रभावित पौधों पर लगे रोजेटी फूल (गुलाब-सूखी फूल) को समय समय पर एकाजित कर नहु करते हो। कपास अनुभान के प्रभारी डॉ करमल सिंह मलिक ने बताया कि कपास की फसल में गुलाबी सूखी की नियन्त्रण के लिए 2 फौरोगोन ट्रैप प्रति एक हल्लार तथा इसमें फसले वाले गुलाबी सूखी के पत्तों को 3 दिनों के अंतराल पर गिनती करें। जून से मध्य अगस्त तक यदि इनमें कल 12-15 पत्तों प्रति ट्रैप तीन दिन में आते हैं तो कौटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता है। 60 दिनों तक की फसल में एक छिड़काव नीम आधारित कौटनाशक (नीम्बीसिर्डन या अचूक) की 5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी के लिए देते हैं 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम जोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें। जीवाणु आगारी रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रैटोसाक्लोन और 600 से 800 ग्राम जोबर ऑक्सिस्ट्रोएइड को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एक हड्डी 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें। जड़ गलन बीमारी से सुखे हुए पौधों को खेत में से उखाड़ कर जमीन में दबा दें। इस रोग से प्रभावित पौधों के आसपास स्वस्थ पौधों में 1 मीटर तक कार्बोडाइम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 400 - 500 मिलीलीटर प्रति पौधा जड़ों में डालें।

पत्ती मरीड़ रोग के काणे नसे मोटी, पत्तों का ऊपर की ओर मुड़ना व पौधे छोटे रह जाते हैं। यह रोग विषाण द्वारा फैलता है। सफेद मध्यांती इस रोग का फैलाने में सहायक है। सफेद मध्यांती का पूर्ण रूप में मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से करें।